International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 45-47

आधुनिक कहानी में सामाजिक आदर्श का मूल्यांकन शाश्वत प्रदेय के द्वारा

डॉ० अनुपमा छाजेड़

Department of Hindi Sahitya, Alexia College of Professional Studies, Indore, Madhya Pradesh, India

सारांश

साहित्य शब्द का अर्थ है सहित होने का भाव। जहाँ शब्द, अर्थ, विचार और भाव का परस्पर सह भाव हो वही साहित्य है, "सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव सामग्री निकाल कर समाज को सौंपता है उसी के संचित भंडार का नाम साहित्य है ।" कहानी साहित्य की एक विधा है। कहानी को दो भागों में बाँटा जा सकता है, प्रथम प्राचीन या पूर्वकालीन कहानियाँ व दूसरी आधुनिक कहानी । प्राचीन कहानी और आधुनिक कहानी के शैली शिल्प, रूप अथवा कला का यह अंतर आज बहुत ही स्पष्ट हो गया है । प्राचीन कहानियों की शैली इतिवृत्तात्मक अथवा वर्णनात्मक होती थी। उसमें आरंभ, मध्य, चरमबिदु और अंत का ऐसा विधान बिलकुल नहीं था। उसमें तो सीधे-सादे रूपे में एक राजा था, उसकी सौ रानियां थी, के साथ कहानी का कथानक आरंभ होता था और एक ही गति से "फिर क्या हुआ" की जिज्ञासा को लेकर आगे बढता था और "जैसी उनकी हुई वैसी सब की हो" अंत के साथ समाप्त जाता था ।

मूल शब्द: साहित्य, आधुनिक कहानी, शाश्वत प्रदेय

प्रस्तावना

कथानक के विकास की वैसी नाटकीय योजना जैसा आधुनिक कहानी में मिलती है, पुरानी कहानियों में नहीं थी। जैसी कलापूर्ण उतार चढाव कहानी के कथानक में आज देखा जाता है वैसा प्राचीन कहानी के क्षेत्र में अकल्पनीय ही है।"[2] अत: प्राचीन कहानी का अन्त सुखान्त होता था आधुनिक कहानी यथार्थपूर्ण है अत: वह सुखान्त कम दुखान्त ज्यादा होती है अत: "आधुनिक कहानी साहित्य का एक विकसित कलात्मक रूप है, जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के सहारे कम से कम पात्रों अथवा चरित्रों के द्वारा कम से कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से मनोवांछित कथानक, चरित्र, वातावरण, दृश्य अथवा प्रभाव की सृष्टि करता है ।"३ आज आधुनिक कहानी में सामाजिक आदर्श का रूप बदल गया है। पूर्वकालीन कहानियों में आदर्श का संबंध कल्पना के साथ था आधुनिक कहानियों में इसका संबंध यथार्थता के साथ हो गया है । सामाजिक आदर्श का आधुनिक कहानी से संबंध बताने के पूर्व हमें समाज क्या है ? आदर्श क्या है ? सामाजिक आदर्श क्या है ? इन प्रश्नों के उत्तर जान लेना अत्यन्त आवश्यक है । व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्ति के अभाव में समाज की स्थापना करना असंभव हे। प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यवहार होता है उसके अपने विचार या मत होते हैं । व्यक्तियों के व्यवहार के आदान-प्रदान से ही समाज निर्मित होता है। समाज व्यक्तिगत समूह है ।

"समाज एक ऐसी ईकाई है, जिसमें व्यक्तिगत भेद हैं। मगर ये भेद, अपनी अंतिम परिणति में स्वत: ही एकाकार हो जाते हैं, एक सामान्य कल्याण भावना में स्वार्थ का समर्पण हो जाता है और परमार्थ का अभ्युदय होता है जो परम अर्थ भी है।"[४] इस प्रकार समाज एक समुदाय है । समाज की व्यक्ति से अलग कल्पना नही की जा सकती है न ही व्यक्ति समाज के बिना रह सकता है व्यक्ति को समाज में रहकर समाज के नियमों का पालन करना ही पडता है। चूंकि मनुष्य का व्यक्तित्व समाज के विभिन्न संबंधों का मिश्रण है, अत: व्यक्तिगत सुख भाव सामाजिक सुख भाव से अलग नहीं रह सकता। कहानीकार समाज की समस्याओं पर विचार कर उन्हें प्रकट करता है व हल प्रस्तुत करता है।

आदर्श क्या है ? आदर्श समाज का सत्य है। भगवतीचरण वर्मा के अनुसार "आदर्श वह है जो हमारे जीवन में घटित होने वाली चीजों में सद् एवं कल्याणकारी के रूप में स्वीकार किया जाता है और इसलिए वह समाज का सत्य है क्योकि वह मानव के विकास का सत्य है ।[५] आदर्श मानव को आध्यात्मिक असीम सत्ता के प्रति समर्पण की भावना को भी जाग्रत करता है।"[६] अतः आज आदर्श का बोलबाला है। आदर्श मानव जीवन का प्रमुख अंग है अत: इसका सीधा संबंध समाज से है अतः प्रश्न सामाजिक आदर्श क्या है ? का समाधान प्रस्तुत करते हुए लेखक कहता है "साहित्य सामाजिक आदर्श का सृष्टा है" सामाजिक आदर्श का संबंध बुद्धि से है अत: वह बौद्धिक है। सामाजिक आदर्श का शब्दिक अर्थ है समाज में स्थित आदर्श। समाज की रचना व्यक्ति से हुई है और व्यक्ति आदर्श से जुडा हुआ है अत: समाज में आदर्श का होना आवश्यक है। चूंकि हम यहाँ साहित्य की प्रमुख विधा आधुनिक कहानी से संबंधित सामाजिक आदर्श की चर्चा कर रहे है अत: कह सकते हैं कि कहानी में वर्णित सामाजिक आदर्श के माध्यम से जीवन के रहस्यों का व सत्यों का उद्घाटन होता है।

साहित्य को मानव कार्य व्यापार का एक रूप कहा है । चूंकि समाज और व्यक्ति के आदर्श और उद्देश्य सदा एक से नहीं रहते, इसलिए साहित्य के आदर्श और उद्देश्य भी निरन्तर बदलते चलते हैं । किसी युग विशेष में उनका वही अंश जीवित रह पाता है, जो उस युग के

नर नारियों को प्रभावित करके युग साहित्य का अंश बन सकता है । इसीलिए उत्सुकता नएपन में होती है क्योकि वहीं विकास की गुंजाईश है, तथा परिवर्तनों में भी क्योकि उसी में हमें प्राणवत्ता के दर्शन हो सकते हैं। जहाँ तक परम्परा का प्रश्न है उसे बनाना या मिटाना मानव के हाथ में नहीं होता, वह केवल उसे सुधार या बिगाड़ सकता है । उसे छोड सकता है या नई परम्पराओं का निर्माण कर सकता है। इन सब क्रियाओं का संबंध वर्तमान से, परिवर्तन से और परिवेश से है ।"[७]

"साहित्य के शाश्वत और परिवर्तनशील रूप की व्याख्या करते हुए डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उचित ही सौंदर्य के प्रश्न क्रो भी इसमें सम्मिलित किया है आप कहते हैं "जिसे हम साहित्य कहते है। उसमें शब्द और अर्थ-पद और पदार्थ की परस्पर स्पर्द्धी चारुता (सौंदर्य) का रहना आवश्यक है। यह आदि सत्य है आगे ही आप यह भी कहते हैं कि "वाग्देवता" के अपूर्ण इंगित विलास से शब्द और अर्थ के संबंधों में परिवर्तन होता रहता है। सौंदर्य का आशय स्पष्ट करते हुए आप कहते है कि समष्टि चित्र में अनुकूल भावांदोलन पैदा करने वाला तत्व ही सौदर्य है, संक्षेप में इसे यों कहा जा सकता है कि समष्टि चित में अनुकूल भावांदोलन उत्पन्न करने वाला तत्व साहित्य का शाश्वत तत्व है परन्तु यह तत्व स्वयं निरन्तर परिवर्तित होता रहता है क्योंकि "व्यक्ति मानव का चित्र कालक्रम से और परिस्थितियों के अनुसार विस्तृत, विकसित और परिवर्तित होता रहता है। समष्टि-मानव चित्र भी निरंतर विकसित और परिवर्तित होता रहता है। इस स्थापना के बाद डॉ. द्विवेदी कहते हैं कि क्रमश: विकसित होते हुए समष्टि चित्र की बात आज अधिक स्पष्ट है। यह आज क्या हे ? ८ स्पष्ट है कि इस का संबंध वैज्ञानिक परिवर्तनों के इस आधुनिक युग से है जिसमें संचार साधनों ओर पारस्परिक विनिमय संबंधों के अभूतपूर्व विस्तार के कारण समष्टि चित्र के विकास की निस्सम संभावनाएं उन्मुक्त हुई है।"[९]

इस विवेचन से यही निष्कर्ष निकलता है कि साहित्य का जो शाश्वत स्तर है वह स्वयं भी परिवर्तन से अविच्छिन्न है इसीलिए वर्तमान परिवर्तन युग के प्रसंग अविच्छिन्न हैं इसी में हमारी दिलचस्पी परम्परा के सातत्व की अपेक्षा उन बिन्दुओं पर अधिक जा पडी है जहाँ हम परम्पराओं को बदलते हुए या नई परम्पराओं को जन्म लेते हुए देखते हैं। श्रेष्ठता, स्थायित्व और अमरता निश्यच ही साहित्य का श्लाघनीय गुण है, बल्कि आवश्यक गुण भी है, परन्तु यह भी तो हो सकता है कि इन गुणों का आभास देने वाला साहित्य हमारे भावों की एकदम आज की उथल-पुथल से उत्पन्न होगा उसके प्रसंग में ऐसा कोई खतरा नही होगा तथा आगामी प्रगति की संभावनाएँ भी हमें उसी में दिखेंगी।[१०]

शाश्वत प्रदेय का अर्थ है Permanent Contribution आज की कहानी में शाश्वत प्रदेय इतना अधिक हो गया है कि प्रत्येक कहानी शाश्वतता से हट कर नहीं हो सकती। कुछ कहानियों के माध्यम से हम शाश्वत प्रदेय का अध्ययन करेंगे। "जैनेन्द्र" की जाहनवी आधुनिक कहानी की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। इसकी शाश्वतता जाहनवी के परिवेश में प्रकट होती है। जाहनवी अपने प्रेमी व भविष्य में होने वाले पति दोनों को धोखा नहीं दे पाती है यह उसके महान् चरित्र, पाक-चरित्र का ही प्रभाव है। सच्चाई व चरित्रता ही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय हे। ब्रजमोहन भी उसके इस सम्मान को याद रखता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार महान् व्यक्ति की सलाह अधिकांश व्यक्ति आसानी से मान लेते हैं।

"अज्ञेय" की "शरणदात्ता" कहानी का शाश्वत प्रदेय मानवता मरती नहीं वह हमेशा जीवित रहतीं है, मानव को मानव की मदद करनी चाहिए, साम्प्रदायिक भेद भाव भूलना ही देश व व्यक्ति के लिए हितकारी है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम ही सर्वोपरी है। जीवन में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की मदद यह सोचकर नहीं करना चाहिए की यह किस संप्रदाय का है बल्कि यह सोचकर करना चाहिए की यह व्यक्ति है, मेरा अपना है। यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

"समझौता" कहानी का शाश्वत प्रदेय है व्यक्ति को परिवेश के अनुसार ढ़लना ही पड़ता है विशेषकर स्त्री को। कुसुम प्रारंभ में आधुनिक परिवेश में पली बड़ी हुई परन्तु उसकी शादी भारतीय सभ्यता पसन्द परिवेश में हो जाती है अन्त में वह इस परिवेश से समझौता कर लेती है और अपनी शाश्वत्तता स्पष्ट करती है। व्यक्ति को परिवेश के अनुसार ही अपना जीवन यापन करना चाहिए। प्यार अपने आप नहीं मिलता उसे पाना या छिनना पड़ता है। व्यक्ति में इतनी समझ होनी चाहिए कि वह कटु भाषी को भी मधुर भाषी में परिणित कर सके। परेश का प्यार व माली की दयनीय स्थिति ही कुसुम मे परिवर्तन लाने में संभव है। यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

"घीसा" गुरूभक्ति का एक अनूठा उदाहरण है । इसका शाश्वत प्रदेय है कि गुरूभक्ति अन्य भक्ति से सर्वश्रेष्ठ है । गुरू का सम्मान करने से ही विद्या प्राप्त होती है। गुरू का अपमान विद्या का अपमान है। घीसा महादेवी की अत्यधिक सेवा करता है।वह क्लास को साफ रखता है। दंगे के समय महादेवी को जाने से रोकता है व जाते समय उन्हें तरबूज देता है। ये सभी उसकी गुरूभक्ति का ही प्रमाण है गुरू पूजनीय होता है। यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है ।

"क्रोटर और कुटीर" में प्रण या कसम का महत्व दिखाया है। अपने प्रण पर अड़े रहने पर बादल तो क्या भगवान को भी झुकाया जा सकता है। परन्तु विश्वास आवश्यक है । यदि एक बार भी प्रण तोड़ दिया जाय तो वह प्रण प्रण नहीं रहता । अत: दूसरों पर विश्वास करने के साथ साथ जरूरी है खुद पर विश्वास करना। अपने आप पर विश्वास है तो फिर वह व्यवित्त कभी नियम, व्रत नहीं तोड़ सकेगा । यह चातक व गोकुल के माध्यम से बताया गया है। चातक अपने व्रत पर अडीग रहता है । गोकुल ईमानदारी के नियम को नहीँ तोड़ता। इन सभी क्रो देखकर चातकपुत्र भी पुन: अपने कोटर लौट जाता है उसे भी व्रत, नियम का महत्त्व समझ में आ गया। अर्थात सही मार्गदर्शन भी आवश्यक है। यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय हे।

"जिन्दगीं ओर जौंक" में शाश्वत प्रदेय के रूप में निरन्तर हँसने व कार्य करने के रूप में समझाया गया है । व्यक्ति को विपरित परिस्थितियों में भी हंसते रहना चाहिए। जीवन हार कर बैठ जाने या मर जाने का नाम नही है बल्कि जीवन में विपरित परिस्थितियों अर्थात दुखों में भी खुश रहकर निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए । जीवन में दुखों से घबराकर मर जाना ही दुखों का हल नहीं है. विपरीत परिस्थितियों में भी जीने की चाह जीवन से अपने आप से

प्यार करना सिखा देती है। जिस प्रकार रजुआ "रजुआ साला" पुकारा जाता था। उससे काम अधिक करवाकर मेहनत के पैसे भी नहीं दिये जाते थे। खाना भी रूखा-सूखा बासी दिया जाता था फिर भी वह कभी उदास नहीं हुआ । अनेकों जानलेवा बीमारियाँ होने पर भी जीने की चाह में वह झूठा पत्र लिखवाता है। अतः : हमें भी "रजुआ" के समान जिंदादील व्यक्ति बनना चाहिए । यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

"वापसी" कहानी "उषा प्रियवंदा" की प्रमुख कहानी हे। इस कहानी में गजाधर बाबू का अपने पुत्र-पुत्री, बहु व पत्नी द्वारा किया गया अपमान दृष्टव्य है । पुत्र व पुत्री अपने पिता को समझ नहीं सके व पत्नी ममतावश अपने पति से दूर होती चली गई। पिता की मेहनत व चाह को सभी ने नज़र अंदाज कर दिया। व्यक्ति को ऐसा नहीं करना चाहिए वैसे गजाधर बाबू को भी उस माहोल या परिवेश के अनुसार ढलना था और अन्य सदस्यों को भी समझौता करना चाहिए था। जीवन में सदैव सामंजस्य बनाकर जीना चाहिए। व्यक्ति को अपने परिवेश में रहना चाहिए पर अपना परिवेश दूसरों पर थोपने पर संबंध बिगडते ही हैं और एक बार यदि घागे में गठान आ गई तो वह कभी खत्म नहीं होती। अत: जीवन में समझौता आवश्यक है, प्रत्येक बात का सोच समझ कर हल निकाला जा सकता है यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

“भीष्म साहनी" की "चीफ़ की दावत" कहानी का शाश्वत प्रदेय सामान्य है अनेक कहानियों में यह दिखाई दे सकता है क्योकि यह समाज की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात है। मां की ममता सभी रिश्तों से महत्वपूर्ण है। माँ बेटे का अनोखा संबंध है। बेटा माँ की ममता, प्यार सब कुछ भूल जाता है वह उसे सम्मान देने के बदले तिरस्कार ही देता है। क्योकि उसके व मॉ के बीच विचारों, व्यवहार आदि में एक पीडी का अन्तर हो जात्ता है और साथ ही वह पत्नी की बातों में आ जात्ता है परन्तु माँ अपने पुत्र के लिए हजारों कष्ट झेलकर भी हमेशा प्यार से ही "बेटा" पुकारती है। बेटे को भी चाहिए कि प्रथम माँ को स्थान दे बाद मेंपत्नी को व पत्नी क्रो समझना चाहिए की वह भी कभी माँ व सास बनेगी। माँ का प्यार अमूल्य है वह जीवन में दोबारा प्राप्त नहीं होता। यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

"तमाशा" कहानी में दोस्ती क्रो महत्व दिया गया है। दोस्ती वह खजाना है जो खत्म नहीं होता जिसके पास यह खजाना है उसे गम नहीं होता। जीवन में सच्चे दोस्त बहुत कम मिलते हैं उन्हें अपने प्यार व स्नेह के बल पर सदैव एक दूसरे की हर संभव मदद करनी चाहिए। कहानी में सुशीला सत्या को बचाने की कोशिश में अपना भविष्य में डॉक्टर बनने का सपना नष्ट देती है। यही इस दोस्ती का प्रमाण है। जीवन में सच्चे दोस्त को कभी भूलना नहीं चाहिए व हर संभव उसकी मदद करनी चाहिए यही इस कहानी का शाश्वत प्रदेय है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रत्येक कहानी का अपना अपना शाश्वत प्रदेय हे । जैसे भगवान शाश्वत है। वह असत्य नहीं है उसी प्रकार जीवन की हर वो घटना जो जीवन में मौड़ लाती है शाश्वत है परन्तु सुगुण ही शाश्वत प्रदेय होता है दुर्गुण नहीं। जिस प्रकार लंका का राजा रावण माता सीता क्रो उठा कर ले गया था यह घटना स्मरणीय हे याद रखने योग्य है परन्तु इसका शाश्वत प्रदेय नहीं है। परन्तु जटायु ने पक्षी होकर भी अपनी जान पर खेल कर माता सीता को बचाने का हर संभव प्रयत्न किया यह शाश्वत प्रदेय है। इस प्रकार शाश्वतता के प्रमुख तत्व प्रेम, विशवास, ईमानदारी उच्च चरित्रता, सच्चाई, वफादारी आदि है। जिसमें प्रेम ऐसा शाश्वत तत्व है जो निर्धन में धन देख सकता है, असुन्दर को सुन्दर देख सकता है, और मूर्ख में विद्वता देख सकता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को प्रेम से जीता जा सकता है। परन्तु यह नाजुक है इसे टूटने नहीं देना चाहिए।

> "रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो चटकाय।
> टूटे से फिर ना जुडे, जुड़े गांठ पड़ जाय ॥"

प्रेमचन्द के अनुसार "आदर्श को सजीव बनाने के लिए यथार्थ का उपयोग होना चाहिए।[११] अत्त: यथार्थवादी आदर्श ही आज हमारे समाज का विशेष अंग हैं। शाश्वतता के साथ लिखा गया साहित्य ही मंगलकारी सिद्ध होगा। वास्तविकता के धरातल पर लिखा साहित्य ही दिर्घायु सिद्ध होगा। आदर्श समाज की एक आदर्श परिकल्पना प्रत्येक मानव मन में होती है लेकिन समस्याएँ, बुराईयों और विघटनकारी तथ्य उसका साक्षात्कार एक अन्यतम समाज से ही कराते हैं, तो उसको गहरा आघात लगता है। कथाकार निश्चय ही एक साधारण मानव से कई अर्थो में विशिष्ट होता है। उसका संवेदनशील मन, रचनात्मक दृष्टिकोण और लेखन, क्षमता, समर्थता, तर्कसंगत बोद्धिकता, मौलिकता उसको विवश कर देती है कि वह अपनी कहानियों में अमंगलकारी तत्वों का उद्‌घाटन करते हुए आदर्श परिकल्पित समाज के संदर्भ में अपनी मौलिक दृष्टि स्पष्ट करे ताकि समाज उसके परिकल्पित समाज के अनुसार ही अपना स्वरूप निर्मित करने हेतु परिष्कार प्रयत्न कर सके।[१२]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. प्रबंध परिमल, लेखक डॉ. बाबूराव जोशी पृष्ठ २१३
२. हिंदी कहानी, डॉ. प्रकाश दीक्षित, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पृष्ठ१०२
३. वहीं पृष्ठ १०३
४. प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण डॉ. राजेंद्र कुमार शर्मा पृष्ठ६६
५. साहित्य के सिद्धान्त और रूप, डॉ.भगवती चरण वर्मा,पृष्ठ५१
६. पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त, डॉ.कल्याण शर्मा पृष्ठ१६५
७. वहीं
८. हिंदी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष, डॉ. ओंकारनाथ श्रीवास्तव पृष्ठ १८९
९. वहीं १९०
१०. वहीं १२२
११. साहित्य का उद्‌देश्य, प्रेमचन्द, पृ. ६३
१२. प्रेमचन्द परम्परा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.२०३